<table>
<tr><td colspan="5"><u>उद्देश्य</u> - इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत (स्वरवाद्य) के प्रयोगत्मक पक्ष में दक्ष बनाना है ।संगीत(स्वरवाद्य)</td></tr>
<tr><th>क्र0 सं0</th><th>कोर्स का नाम</th><th>कोर्स कोड</th><th>अंक</th><th>श्रेयांक</th></tr>
<tr><td>3</td><td>प्रयोगात्मक - 1</td><td>एम0पी0ए0एम0आई0-103</td><td>200</td><td>8</td></tr>
<tr><td>प्रथम खण्ड</td><td>* मंच प्रदर्शन - 20मिनट का (निम्न रागों में से किसी एक में)
इकाई 1 - श्याम कल्याण | इकाई 3 - अहीरभैरव
इकाई 2 - जैजैवन्ती | इकाई 4 - झिंझोटी
• मंच प्रदर्शन जिस राग में हो उसमें निम्न चीजे होना आवश्यक है–मसीतखानी गत, रजाखानी गत, आलाप, जोड आलाप, तोडे वझाला ।
• मंच प्रदर्शन का समापन इच्छित धुन द्वारा ।</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>4</td><td>प्रयोगात्मक - 2</td><td>एम0पी0ए0एम0आई0-104</td><td>350</td><td>14</td></tr>
<tr><td>प्रथम खण्ड</td><td>* प्रदर्शन – 1
इकाई 1 -पूरिया कल्याण | इकाई 2 -बिहागडा | इकाई 3 -बैरागी
इकाई 4 -भैरव | इकाई 5 - केदार | इकाई 6 -मालकौंस
• मंच प्रदर्शन के राग एवं प्रदर्शन - 1 के सभी रागों में रजाखानी गत, आलाप, जोड आलाप, तोडे वझाला।</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>द्वितीय खण्ड</td><td>*प्रदर्शन - 2 एवं वाद्य को मिलाने का ज्ञान
इकाई 1 - पाठ्यक्रमों के रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप, द्रुत गत वतोडे।
इकाई 2 - अपने वाद्य को मिलाने का ज्ञान।</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>तृतीय खण्ड</td><td>* पढन्त एवं मौखिक परीक्षा
इकाई 1 -पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों की पढन्त।
इकाई 2 -पाठ्यक्रम की तालों की लयकारी (दुगुन, तिगुन, चौगुन व आड़) में पढन्त।
इकाई 3 -पाठ्यक्रम सम्बन्धित मौखिक परीक्षा।</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td colspan="5">राग - श्यामकल्याण , जैजैवन्ती , अहीर भैरव , झिंझोटी , पूरिया कल्याण , बैरागी , बिहागडा , भैरव , केदार व मालकौंस
ताल - तीनताल , झपताल , एकताल , आडाचारताल , रूपक , चारताल , धमार व 9 मात्रा की ताल</td></tr>
<tr><td colspan="5">सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री -
1.वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 । 2. श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण ।
3. डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग,राग विशारद(दोनों भाग),4. पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 । (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।
5. श्री एस0एस0 परान्जपे,भारतीय संगीत का इतिहास</td></tr>
</table>